

Vol 6 Issue 11 August 2017

ISSN No : 2249-894X

*Monthly Multidisciplinary
Research Journal*

*Review Of
Research Journal*

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2249-894X

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Mabel Miao Center for China and Globalization, China
Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Xiaohua Yang University of San Francisco, San Francisco	Ruth Wolf University Walla, Israel
Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Karina Xavier Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA	Jie Hao University of Sydney, Australia
Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania	May Hongmei Gao Kennesaw State University, USA	Pei-Shan Kao Andrea University of Essex, United Kingdom
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Marc Fetscherin Rollins College, USA	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania
	Liu Chen Beijing Foreign Studies University, China	Ilie Pinte Spiru Haret University, Romania
Mahdi Moharrampour Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran	Nimita Khanna Director, Isara Institute of Management, New Delhi	Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai
Titus Pop PhD, Partium Christian University, Oradea, Romania	Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	Sonal Singh Vikram University, Ujjain
J. K. VIJAYAKUMAR King Abdullah University of Science & Technology, Saudi Arabia.	P. Malyadri Government Degree College, Tandur, A.P.	Jayashree Patil-Dake MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC), Kachiguda, Hyderabad
George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi	S. D. Sindkhedkar PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]	Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary Director, Hyderabad AP India.
REZA KAFIPOUR Shiraz University of Medical Sciences Shiraz, Iran	Anurag Misra DBS College, Kanpur	AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI, TN
Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur	C. D. Balaji Panimalar Engineering College, Chennai	V.MAHALAKSHMI Dean, Panimalar Engineering College
Awadhesh Kumar Shirotriya	Bhavana vivek patole PhD, Elphinstone college mumbai-32	S.KANNAN Ph.D , Annamalai University
	Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust), Meerut (U.P.)	Kanwar Dinesh Singh Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....



दास्य भक्ति की लयात्मकता में सूरदास की स्वरलहरी



रेणु बाला

सहायक प्रवक्ता, डी. ए. वी. कालेज, अबोहर, मम्मू खेडा,
तहसील व जिला फाजिलका, पंजाब.

सारांश :

महाकवि सूरदास जी हिन्दी साहित्य के उन महान कवियों में हैं जिनके ऊपर उसका महान गौरव टिका है। सूर को अविर्भाव उस समय में हुआ जब हिन्दू जाति विदेशी आक्रमणकारियों से संतुष्ट होकर एकदम निराश और विषण हो चुकी थी। ऐसे ही समय सूरदास ने त्रिभुवन—मोहन आनन्दकन्द भगवान कृष्ण की लीलामाधुरी का गान कवेक हिन्दु जाति को नवस्फूर्ति प्रदान और उसका मन उस परब्रह्म के माधुर्य स्वरूप में रमाकर बहुत बड़ा आश्वासन प्रदान किया। सूरकी सरस वाणी से भारत के असंख्य सूखे हृदय हरे हो उठे और तदयुगीन भगनाश जनता को जीने का नवीन उत्साह मिला।

प्रस्तावना –

डॉ. शशि—अग्रवाल सूर के विषय में लिखते हैं—“ सूरदास का व्यक्तित्व साम्प्रदायिकता से बहुत ऊपर उठा हुआ है। सूर न तो धर्म प्रवर्तक थे और न धर्म प्रचारक। सूर केवल कृष्णभक्त थे।”

सूर का हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण कल्पधारा में अपना विशिष्ट स्थान है। सूर ने दास्य भाव की भक्ति के पदों का गायन करके जन मन की भावनाओं को उद्घेलित किया है। सूर की दास्य भक्ति को जानने से पूर्व दास्य—भक्ति क्या है। इस बारे में विवेचन अनिवार्य है।

नारदभक्ति सूत्र में प्रेमाभक्ति का विशुद्ध विवेचन हुआ है। और ग्यारह आसक्तियों में से एक आसक्ति दास्यशक्ति है। जो भक्त पराभक्ति को प्राप्त कर लेते हैं उनमें तो ये सभी आसक्तियाँ रहती हैं, जैसे ब्रज की गोपियों में, परन्तु अन्य भक्तों में कोई—न—कोई आसक्ति अवश्य रहती है। श्रीमद्भागवत में इन सभी प्रकार के भक्तों का उल्लेख है।

प्रमुखता सेवक या भक्त के लिए प्रभु ही बन्धु, जनिता, विधाता हैं, सर्वस्व है। प्रभु के अतिरिक्त और कोई नहीं है। सर्वस्व समर्पण कर अपने आपको क्षुद्र सेवक मानकर की गयी भक्ति दास्यासक्ति व दास्य भाव के आदर्श भक्त है। अतः प्रभु की सेवा करना ही दास्य भक्ति में सेवक का परम कर्तव्य माना जाता है।

सूरदास जी की रचना सूरसागर में विनय तथा भक्ति प्रकरण के पदों जिनमें उनकी दास्य भक्ति परिलक्षित होती है, ने सबके हृदय में भागवतभक्ति का पावन भाव जाग्रत करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

सूरसागर के प्रथम स्कन्ध के प्रथम भाग में विनय के पद लिखे गये हैं जो कि सूर की दास्य भाव की भक्ति को उदघाटित करते हैं। यह पद उस समय के लिखे हुए हैं जब महाकवि सूरदास का सम्पर्क श्री वल्लभाचार्य जी से नहीं हुआ था। और न तब तक उन्होंने भागवत अनुक्रमिका सुनी थी और न किसी ने भगवतलीला गान की और उन्हे उन्मुख बनाने की चेष्टा ही की थी। सूरदास की वार्ता के अनुसार उस समय तक वे केवल गौघाट पर दैन्यपूर्ण पदों का गान करते हुए घिघियाते हुए जीवन यावन करते थे।

सूरदास ने विनय तथा भक्ति के पदों में अपनी दास्य भक्ति का परिचय देते हुए प्राचीन कवियों की मंगलाचरण की परिपाटी का पालन करते हुए दिखाई देते हैं। वह अपनी विनय भाव की भक्ति के अनुसार अपने हृदय के इष्टदेव के चरणों की वन्दन करते हैं—

“चरन—कमल बंदौ हरि—राइ।

जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंघै को सब कछु दरसाई”।

बाबू गुलाबराय जी का सूरदास के विनय के पदों के बारे में कथन अवलोकनीय है “ सूरदास जी ने अपने सूरसागर के पहले स्कन्ध में विनय के पद कहे हैं। वह एक प्रकार से सूर की विनय पत्रिका है।” सूर ने विनय भाव की भक्ति में अपनी दास्य भक्ति को विस्तारित करते हुए सगुण साकार भगवान के रूप की उपासना पर ही अत्यधिक बल दिया है। वह निर्गण के विरोध में लिखते हैं—

“अबिगत—गति कछु कहत न आवे।

ज्यों गूँगे मीठे फल को रस, अंतर्गत ही भावै”।

इस प्रकार सूर ने अपने आराध्य श्रीकृष्ण की भक्त वत्सलता का बरतूबी परिचय दिया है। उनके अनुसार वास्तव में भक्त भगवान की दयालुता का वर्णन करते करते नहीं थकतीं तो भगवान में तो अपने सेवक की रक्षा अत्यन्त तत्परता से करते हैं। सूरदास की लेखनी में—

“भक्त—विरह कातर करुणामय डोलत पाछै लागे।

सूरदास ऐसे स्वामी को देहि पीढि सो आभागे।”

दास्य भक्ति की झंकार में सूर ने अपने हरि की असीम कृपा के अनेक उदाहरणों को अलंकृत किया है। उनके अनुसार भगवान अपने भक्त की योग्यता देखकर कृपा नहीं करते। उनकी दृष्टि में भगवान जाति, कुजाति, कुल आदि किसी का भी विचार नहीं करते। वे तो केवल प्रीति के ग्राहक हैं—

“राम भक्त वत्सल निज बानौ
जाति, गोत, कुल, नाम गनत नाहि, रंक होइ कै रानै”

लाला भगवानदीन भी लिखते हैं— “सूर के विनय के पद बड़े स्वाभाविक हैं। सूर जैसे समूचे वैरागी के हृदय से ही ऐसे उदगार निकल सकते हैं, उनका प्रत्येक पद भक्ति जलसिक्त हृदय से निकलता है।

सूर के विनय संबंधी पदों में संसार की अनित्यता, वैराग्य पश्चाताप उदबोधन, सत्संगति महिमा आदि महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ प्रदर्शित करती हैं। सूर भले ही कृष्ण भक्त थे। फिर भी उन्होंने राम व कृष्ण के बीच भेद स्वीकार नहीं किया। वे राम व कृष्ण की महिमा का वर्णन करते हुए अपने हृदय के उदगार व्यक्त किया करते हैं।

“हमारे निर्धन के धन राम

चोर न लेत, घटत नाहिं कबहुं, आवत गाढ़ै कामा।”

सूर खूद को पतित समझकर, अपने आराध्य श्रीकृष्ण के चरणों में वन्दना करते हैं और अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करते हैं—

“प्रभु, हौं, सब पतितनी कौं टीकौं।

और पतित सब दिवस चारि के, हौं तो जनमत ही कौं”।

इन पदों में सूर का दैन्य भाव ही दिखाई पड़ता है। वास्तविकता तो यह है कि बिना दैन्य— भाव के भक्ति भाव सम्भव ही नहीं है। अत्यधिक मार्मिक व्यथा के साथ सूर के हृदय से दीनता का प्रदर्शन इन पदों में मिलता है—

“अब कै राखि लेह भगवान हैं। अनाथ बैढ़यों द्रुमै—डरिया, पारधि साधै बान।”

डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी सूर की दैन्य भाव की भक्ति के संबंध में लिखते हैं— “यह दैन्य तुलसी की विनय—पत्रिका में अभिव्यक्त दैन्य से कम नहीं।”

सूर दास्य भक्ति से सिक्त होकर अपने इष्ट कृष्ण की महिमा को प्रतिपादित करते हुए मानते हैं कि इस संसार में सम्पूर्ण कार्य उनकी ही मर्जी के अनुसार हो रहे हैं। इस संसार में वहीं होता है जो त्रिभुवन स्वामी चाहते हैं—

(“करी गोपाल की सब होइ।)

इन पदों में सूर ने इश्वर को सर्वोपरि स्वीकारा है—

“होत सो जो रघुनाथ ठरै

पचि—पचि रहै सिद्ध साधक मुनि तऊ न बढै घटै”।

सूरसागर' सूरदास की आध्यात्मिक अनुभूतियों का पारावार है। इन्होंने संसार की निरासता का प्रतिपादन करके वैराग्य भावना को प्रबलतम मानते हुए भक्ति की अनिवार्यता पर बल देते हैं। इन्होंने जीव और जगत के परमार्थिक सत्य का उद्घाटन करके मानव जीवन के चरम लक्ष्य का चिंतन मनन किया है। सूर दास्य भक्ति की लयात्मकता में माया का त्याग, हरि का भजन करने की प्रेरणा प्रदान करते दिखलाई पड़ते हैं—

“सूरदास भगवत भजन बिनु, ज्यों अंजलि जल छिनौ”

“सूरदास कछु खरच न लागत राम नाम सुख लेत”

“सूरदास भगवंत भजन बिनु जम के हाथ बिकानौ”

बाबू गुलाबराय जी इनके दैन्य भाव के विषय में कहते हैं—

“सूर के विनय के पदों में दैन्य और अखण्डपन दोनों ही दिखाई देते हैं। वह अखण्डपन मुँह लगे दास का सा है जो अपने स्वामी से भी दो चार खरी—खोटी कह सकता है।”

(विनय तथा भक्ति) प्रकरण के सत्संग महिमा में भी उनकी दास्य भक्ति का दिग्दर्शन होता है—

जा दिन संत पाहुनै आवत

तीरथ कोटि स्नान करै फल जैसे दरसन पावत”

इसके अतिरिक्त 'आत्मज्ञान' प्रसंग में दास्य भक्ति का उद्घाटन करने के साथ—साथ आत्मज्ञान की महत्त्वता को उभारने हैं क्योंकि उसके अभाव में प्राणी की दशा कस्तूरी की खोज में वन—वन भटकने वाले मृग जैसी हो जाती है—

“अपनायौ आपन ही बिसरयौ।

जैसे स्वान कोंच मन्दिर में भूमि भूमि भूके परयौ”।

इसके विपरीत आत्मज्ञान की दशा में यह स्थिति उत्पन्न हो जाती है। सतगुरु ज्ञान उपदेश देने पर—

“अपुनयौ आपुन ही मै पायौ

सब्दहि सब्द भयौ उजियारौ सतगुरु, भद बतायौ”

इस प्रकार हम सूरदास के विनय व दास्य भाव के पदों की समीक्षा करते हुए कह सकते हैं कि सूर के विनय के पद बड़े स्वाभाविक हैं। सूर जैसे सच्चे वैरागी के हृदय से ही ऐसे उदगार निकल सकते हैं। उनका प्रत्येक शब्द भगवद् भक्ति जल सिक्त हृदय से निकलता है। तुलसीदास के बाद सूर ही विनय संबंधी पद रचने में सफल हुए हैं। सूर के विनय के पद भक्त हृदय सूर के हृदय की मनोहारी झाँकी प्रस्तुत करते हैं। इन पदों में विनय प्रबोध, वैराग्य, दीनता व आत्मसमर्पण की भावनाओं के साथ भक्ति की सरिता उमड़ रही हैं।

संदर्भ—

- | | |
|-----------------------------|---|
| लेखक | पुस्तक |
| 1. डा. सीएच रामुलु— | सूर और पोतना के काव्य में भक्ति तत्त्व
पृष्ठ संख्या—31, प्रकाशक— दक्षिणचलीय, साहित्य समिति, गाँधीनगर, हैदराबाद |
| 2. डा. वेद प्रकाश शास्त्री— | सूर की मौलिक
पृष्ठ संख्या—23, प्रकाशक— सन्मार्ग प्रकाशन 16—न्यू बी. बैंग्लो रोड
जवाहर नगर, दिल्ली—110007 |
| 3. हरबंस लाल शर्मा — | सूरदास
पृष्ठ संख्या—73 राधा कृष्ण प्रकाशन प्रा. लि.
2/38 अंसारी मार्ग, दरियागंज |

- जवाहर नगर, दिल्ली-110002
4. डा. सौ अवंतिका कुलकर्णी – सूर एवं तुलसी का बाल चित्रण
पृष्ठ संख्या-22,23 साहित्याकार, एस एम एस हाईवे
जयपुर- 302003 प्रथम संस्करण
5. महाकवि सूरदास – जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल पृष्ठ संख्या-30,31,32,33

Publish Research Article

International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Books Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- ★ Directory Of Research Journal Indexing
- ★ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ★ OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005, Maharashtra
Contact-9595359435

E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com